3 क्या निराश हुआ जाए



हजारीप्रसाद द्विवेदी
(जन्म : सन् 1907 ई. : निधन : सन् 1979 ई.)

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म बलिया (उ.प्र.) जिले के 'दूबे का छपरा' नामक गाँव में हुआ था। पारिवारिक परंपरा अनुसार संस्कृत का अध्ययन शुरू करके उन्होंने हिन्दू काशी विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के आश्रम में 1940 ई.से. 1950 ई. तक हिन्दी भवन के निर्देशक रहे। तत्पश्चात् काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी एवं पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष पद पर कार्य किया। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया।

हिन्दी साहित्य जगत में द्विवेदीजी एक निबंधकार, उपन्यासकार, समालोचक तथा शोधकर्ता इतिहासकार के रूप में प्रचलित हैं। 'अशोक के फूल', 'विचारप्रवाह', 'कुटज', 'कल्पलता' आदि निबंधसंग्रह; 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'पुनर्नवा', 'चारुचंद्रलेख', 'अनामदास का पोथा', उपन्यास तथा 'कबीर', 'सूरदास', 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल', 'साहित्य सहचर', 'हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास' (हिन्दी साहित्य की भूमिका) आदि आलोचना तथा इतिहास ग्रंथ हैं।

प्रस्तुत निबंध में द्विवेदीजी ने यह समझाया है कि तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त अनाचार केवल बाहरी स्तर पर है; वास्तव में आज भी लोगों में मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था कायम है। अपने जीवन में घटित कुछ घटनाओं के द्वारा बताया है कि हमें निराश नहीं होना चाहिए अपितु हमें जीवन के प्रति आस्थावान बने रहना चाहिए।

मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है। समाचार-पत्र में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है। हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ही ऊँचे पद हैं, उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं।

एक बहुत बड़े आदमी ने मुझसे एक बार कहा था कि इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता, जो कुछ भी करेगा, उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दीख रहा है, गुणी कम या बिल्कुल ही नहीं। स्थिति अगर ऐसी है तो निश्चय ही चिन्ता का विषय है।

क्या यही भारतवर्ष है, जिसका सपना तिलक और गाँधी ने देखा था? रवीन्द्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान् संस्कृत-सभ्य भारतवर्ष किसी अतीत के गह्वर में डूब गया? आर्य और द्रविड़, हिन्दू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलनभूमि 'महामानव समुद्र' क्या सूख ही गया? मेरा मन कहता है, ऐसा हो नहीं सकता। हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलानेवाले निरीह और भोले-भोले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करनेवाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदार को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।

परंतु ऊपर-ऊपर जो कुछ दिखाई दे रहा है, वह बहुत ही हाल की मनुष्यनिर्मित नीतियों की त्रुटियों की देन है। सदा मनुष्य-बुद्धि नई परिस्थितियों का सामना करने के लिए, नए सामाजिक विधि-निषेधों को बनाती है, उनके ठीक साबित न होने पर उन्हें बदलती है। नियम-कानून सबके लिए बनाए जाते हैं, पर सबके लिए कभी-कभी एक ही नियम सुखकर नहीं होते। सामाजिक कायदे-कानून कभी युग-युग से परीक्षित आदर्शों से टकराते है, इससे ऊपरी सतह आलोड़ित भी होती है, पहले भी हुआ है, आगे भी होगा। उसे देखकर हताश हो जाना ठीक नहीं है।

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया है। उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक तत्त्व स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते है, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन

तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत निकृष्ट आचरण है। भारतवर्ष ने कभी भी उन्हें उचित नहीं माना, उन्हें सदा संयम के बंधन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है परंतु भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हुआ यह है कि इस देश के कोटि-कोटि दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक कायदे-कानून बनाए गए हैं, जो कृषि उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति को अधिक उन्नत और सुचारु बनाने के लक्ष्य से प्रेरित हैं, परंतु जिन लोगों को इन कार्यों में लगना है, उनका मन हर समय पवित्र नहीं होता। प्राय: वे ही लक्ष्य को भूल जाते और अपनी ही सुख-सुविधा की ओर ज्यादा ध्यान देने लगते हैं।

व्यक्ति-चित्त सब समय आदर्शों द्वारा चालित नहीं होता। जितने बड़े पैमाने पर इन क्षेत्रों में मनुष्य की उन्नति के विधान बनाए गए, उतनी ही मात्रा में लोभ, मोह जैसे विकार भी विस्तृत होते गए। लक्ष्य की बात भूल गई। आदर्शों को मजाक का विषय बनाया गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया। परिणाम जो होना था, वह हो रहा है। यह कुछ थोड़े-से लोगों के बढ़ते हुए लोभ का नतीजा है, परंतु इससे भारतवर्ष के पुराने आदर्श और भी अधिक स्पष्ट रूप से महान् और उपयोगी दिखाई देने लगे हैं।

भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर-भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए । आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है। समाचार-पत्रों में जो भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीजों को गलत समझते हैं और समाज से उन तत्त्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं।

दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करते समय उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात हैं, अच्छाई को उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं, जिन्हें उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।

एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपए का नोट दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकंड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपए रख दिए और बोला, ''यह बहुत गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।'' उनके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

कैसे कहूँ कि दुनिया में सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गई हैं, वैसी अनेक अवांछित घटनाएँ भी हुई हैं, परंतु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।

एक बार मैं बस-यात्रा कर रहा था। मेरे साथ मेरी पत्नी ओर तीन बच्चे भी थे, बस में कुछ खराबी थी, रुक-रुक कर चलती थी। गंतव्य से कोई पाँच मील पहले ही एक निर्जन सुनसान स्थान में बस ने जवाब दे दिया। रात के कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गए। कंडक्टर ऊपर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को संदेह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है।

बस में बैठे लोगों ने तरह-तरह की बातें शुरू कर दीं। किसी ने कहा, ''यहाँ डकैती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूट लिया गया था।'' परिवार सहित अकेला मैं ही था। बच्चे पानी-पानी चिल्ला रहे थे। पानी का कहीं ठिकाना न था। ऊपर से आदमियों का डर समा गया था।

कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़ कर मारने-पीटने का हिसाब बनाया। ड्राइवर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह बड़े कातर ढंग से मेरी ओर देखने लगा और बोला, ''हम लोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं, बचाइए, ये लोग मारेंगे।'' डर तो मेरे मन में भी था, पर उसकी कातर मुद्रा देखकर मैंने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं है, परंतु यात्री इतने घबरा गए कि वे मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हुए। कहने लगे, ''इसकी बातों में मत आइए, धोखा दे रहा है। कंडक्टर को पहले ही डाकुओं के यहाँ भेज दिया है।''

मैं भी बहुत भयभीत था, पर ड्राइवर को किसी तरह मार-पीट से बचाया। डेढ़-दो घंटे बीत गए। मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। मेरी और मेरी पत्नी की हालत बुरी थी। लोगों ने ड्राइवर को मारा तो नहीं, पर उसे बस से उतार कर एक जगह घेर कर रखा। कोई भी दुर्घटना होती है, तो पहले ड्राइवर को समाप्त कर देना उन्हें उचित जान पड़ा। ये गिड़गिड़ाने का कोई विशेष असर नहीं पड़ा। इसी समय क्या देखता हूँ कि एक खाली बस चली आ रही है और उस पर हमारा बस कंडक्टर भी बैठा हुआ है। उसने आते ही कहा, अड्डे से नई बस लाया हूँ, इस पर बैठिए। वह बस चलाने लायक नहीं है।'' फिर मेरे पास एक लोटे में पानी और थोड़ा दूध लेकर आया और बोला, ''पंडितजी ! बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया। वहीं दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया।'' यात्रियों में फिर जान आई। सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्राइवर से माफी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड्डे पहुँच गए।

कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गई! कैसे कहूँ कि लोगों में दया-माया रह ही नहीं गई! जीवन में न जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं, जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया है, परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो, जिनमें धोखा खाया है, तो जीवन कष्टकर हो जाएगा, परंतु ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है, निराश मन को ढाढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने एक प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।

मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है। लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान् भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

मेरे मन! निराश होने की जरूरत नहीं है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

तस्करी चोरी **मनीषी** पंडित, मेधावी **माहौल** परिस्थिति **निरीह** निराधार **फरेब** धोखा **भीरु** कायर **आलोड़न** मथना, हिलोरना **निकृष्ट** अधम, नीच **गुमराह** भुला हुआ **पैमाना** मापदंड **दकियानूसी** पुराने ख्यालवाला **त्रुटि** कमी, गलती **कातर** लाचार

मुहावरे

मन बैठ जाना उदास होना, मन मारना **फलना-फूलना** समृद्ध होना, विकसित होना **पर्दाफाश करना** भेद खोलना **ज्योति बुझना** मरना **कातर ढंग से देखना** भयभीत होकर देखना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नो के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) आज समाचारपत्र में कौन-कौन से समाचार भरे रहते हैं ?

(2) देश का वातावरण आज कैसा बन गया है ?

(3) भारतवर्ष ने किसको अधिक महत्त्व नहीं दिया है ?

(4) मनुष्य के मन में कौन-कौन से विचार है ?

(5) भारतवर्ष किसको धर्म रूप में देखता आ रहा है ?

(6) बस कंडक्टर क्या लेकर लौटा था ?

2. निम्नलिखित प्रश्नो के दो-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) लोगों में महान मूल्यों के बारे में आस्था क्यों हिल गई है ?

(2) लेखक क्या देखकर हताश हो जाना उचित नहीं मानते ?

(3) देश के दरिद्रजनों की हीन अवस्था दूर करने के लिए क्या किया गया है ?

(4) कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने प्रार्थना-गीत द्वारा भगवान से क्या याचना की है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नो के पाँच-छ वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) लेखक का मन क्यों बैठ जाता है ?

(2) भारतवर्ष को 'महामानव' समुद्र क्यों कहा गया है ?

(3) धर्म को भारतवर्ष में श्रेष्ठ क्यों माना गया है ?

(4) कंडक्टरने अपनी ईमानदारी कैसे बताई ?

4. मुहावरों का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

मन बैठ जाना, पर्दापत्रक करना, फलना-फूलना, हवाइयाँ उडना, पर्दाफाश, ढाँढस बँधाना, कातर ढंग से देखना

शब्द-समूह के लिए एक-एक शब्द दीजिए :

धर्म से डरनेवाले, मिलन की भूमि, सुख देनेवाला

5. विशेषण बनाइए :

भारत, समाज, क्रोध, समय, धर्म

6. भाववाचक बनाइए :

डाकू, आदमी, बहुत, सभ्य, मानव

7. विरोधी शब्द बनाइए :

ईमानदार, भ्रष्टाचार, आंतरिक, सबल

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता।
  हर अंधकार के पीछे सुबह का सूरज अवश्य छिपा होता है।
  - दोनों विधानों को समझाइए:

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'निराश नहीं होना चाहिए। इस विषय की चर्चा कीजिए।
  भारतवर्ष के 'महान मनीषियों' के बारे में वर्ग में अधिक जानकारी दीजिए।